मन्नू भण्डारी के साहित्य में नारी जीवन

पी.एम.आर. जयन्ती
प्राध्यापक, हिंदी विभाग
एस.के.आर. एवं एस.के.आर. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय (स्वायत्त)
कडप्पा (आंध्र प्रदेश)

सारांश-मन्नू भण्डारी हिंदी साहित्य की एक प्रमुख नारीवादी लेखिका हैं, जिनके कथा-साहित्य में नारी जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और जागृति का जीवंत चित्रण मिलता है। उनका लेखन साठोत्तरी युग की सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ नारी परंपरागत बंधनों से मुक्त होकर स्वावलंबी और चेतनशील बनने की प्रक्रिया को दर्शाता है। यह शोध पत्र उनके उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से नारी के पारिवारिक विघटन, प्रेम-यौन संबंधों की जटिलताएँ, कामकाजी जीवन की चुनौतियाँ, विधवा जीवन की एकांतता तथा सामाजिक कुरीतियों जैसे दहेज, बाल विवाह और लैंगिक असमानता का विश्लेषण करता है। प्रमुख रचनाओं जैसे 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'एक इंच मुस्कान', 'यही सच है' और 'लड़की' में नारी चेतना का विकास स्पष्ट है, जहाँ नायिकाएँ शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और विद्रोह के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित करती हैं। भण्डारी का साहित्य नारी को वस्तु से व्यक्ति बनाने की जद्दोजहद को उजागर करता है, जो पुरुष-प्रधान समाज की आलोचना करता है और स्त्री मुक्ति की प्रेरणा देता है। शोध का उद्देश्य इन पहलुओं को गहनता से समझना है, ताकि समकालीन संदर्भ में नारीवादी विमर्श की प्रासंगिकता स्थापित हो। निष्कर्षत:, भण्डारी का लेखन नारी जीवन को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाता है, जो समाज को समानता और उदारता की ओर प्रेरित करता है। यह अध्ययन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की समृद्धि को रेखांकित करता है, जहाँ नारी केवल पीड़ित नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी शक्ति है।

बीज शब्द-मन्नू भण्डारी, नारी जीवन, स्त्री चेतना, हिंदी कथा-साहित्य, पारिवारिक विघटन, प्रेम-यौन संबंध, स्वावलंबन, दहेज प्रथा, लैंगिक असमानता, नारीवादी विमर्श, परंपरा-आधुनिकता द्वंद्व, विधवा जीवन।

प्रस्तावना-हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की धारा को मजबूत करने वाली लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी का स्थान अद्वितीय है। उनका जन्म ३ अप्रैल १९३१ को मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। पिता एक वकील थे, जो अक्सर स्थानांतरण के कारण परिवार को भटकने पर मजबूर करते थे। इस अस्थिरता ने उनके जीवन को प्रभावित किया, जो उनके साहित्य में परिव्राजक नारी की छवि के रूप में प्रतिबिंबित होता है। शिक्षा के लिए उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की डिग्री प्राप्त की और उसके बाद लेखन की ओर रुख किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भण्डारी साठोत्तरी काल की प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने नई कहानी आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका विवाह राजेंद्र यादव से हुआ, जो स्वयं एक प्रमुख लेखक थे, लेकिन वैवाहिक जीवन में आए द्वंद्वों ने उनके साहित्य को और गहराई प्रदान की। १९८४ में 'महाभोज' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला, जो राजनीतिक व्यंग्य के साथ नारी दृष्टिकोण को जोड़ता है।भण्डारी का साहित्य नारी जीवन को केवल शोषण की वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि एक सक्रिय, संघर्षशील और चेतनशील व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करता है। उनका लेखन आधुनिक भारत की नारी की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ परंपरागत मूल्यों और आधुनिक सभ्यता के बीच का द्वंद्व नारी के जीवन को आकार देता है। मन्नू भण्डारी का विचार है कि आधुनिक जीवन की समस्याओं का समाधान परम्परागत मूल्यों से नहीं प्रत्युत आधुनिक मूल्यों से ही होता है।"" उनके उपन्यास और कहानियाँ नारी की मनोवैज्ञानिक गहराई को उकेरती हैं, जहाँ वे पुरुष-प्रधान समाज में उत्पीड़न का सामना करती हैं, किंतु विद्रोह और आत्म-जागरण के माध्यम से अपनी भूमिका स्थापित करती हैं। प्रमुख रचनाओं में 'आपका बंटी' (१९७१) दाम्पत्य विघटन और मातृत्व की पीड़ा को दर्शाता है, जहाँ नायिका मीरा अपने पुत्र बंटी की मानसिक समस्या से जूझती है। 'महाभोज' (१९७९) राजनीतिक भ्रष्टाचार के साथ नारी की सामाजिक भूमिका को जोड़ता है, जबकि 'एक इंच मुस्कान' (१९८०) में विधवा नारी की एकांतता और स्वावलंबन की कहानी है।कहानी संग्रहों जैसे 'यही सच है' (१९७४) में स्त्री चेतना की बहुलता दिखाई गई है, जिसमें नारीवाद, स्त्रीवाद और सामाजिक-आर्थिक मुद्दे प्रमुख हैं। 'लड़की' कहानी दहेज और सामाजिक दबावों का प्रतीक है, जहाँ नायिका यशोदा परिवार की आर्थिक तंगी और पति के रवैये से जूझती है। भण्डारी की नारियाँ पढ़ी-लिखी और स्वतंत्र होती हैं, जो विवाह को व्यक्तित्व बेचने जैसा मानती हैं और पुरुष-केंद्रित सोच को चुनौती देती हैं। उनके साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ विविध रूपों में उभरती हैं—पारिवारिक विघटन, प्रेम-यौन संबंधों की जटिलताएँ, कामकाजी महिलाओं का द्वंद्व और विधवा जीवन की एकांतता। उदाहरण के लिए, 'घुटन' में नारी की आंतरिक पीड़ा और सामाजिक बंधनों से छटपटाहट स्पष्ट है।

स्वतंत्र भारत में आर्थिक और सामाजिक विषमता ने पारिवारिक विघटन को जन्म दिया, जहाँ आत्म-केन्द्रितता परिवार को तोड़ती है। भण्डारी इन मुद्दों को यथार्थवादी ढंग से उठाती हैं, जैसे 'एखाने आकाश नाई' में संयुक्त परिवार के विघटन को। उनका लेखन नारी को वस्तु से व्यक्ति बनाने की जद्दोजहद को दर्शाता है, जहाँ शिक्षा और सामाजिक जागृति नारी सशक्तिकरण के आधार बनती हैं। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की यह धारा कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा आदि के साथ भण्डारी ने मजबूत की। प्रस्तावना उनके साहित्य के इन पहलुओं का आधार प्रदान करती है, जो शोध के माध्यम से गहन विश्लेषित किए जाएँगे। भण्डारी का योगदान न केवल साहित्यिक है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी, जो नारी को मुख्यधारा में लाता है।

उद्देश्य-इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

A.मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में नारी जीवन के चित्रण का विश्लेषण करना, विशेष रूप से परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व के संदर्भ में।

B.नारी की प्रमुख समस्याओं—जैसे दाम्पत्य विघटन, प्रेम संबंधों की जटिलताएँ, कामकाजी जीवन की चुनौतियाँ और विधवा जीवन की एकांतता—को उदाहरणों के साथ समझना।

C.उनके साहित्य में नारी चेतना की प्रगति को ट्रेस करना और समकालीन समाज में इसकी प्रासंगिकता स्थापित करना।

D.नारी मुक्ति के लिए साहित्य की भूमिका को रेखांकित करना, ताकि समाज में उदार दृष्टिकोण विकसित हो और लैंगिक समानता को बढ़ावा मिले।

मन्नू भण्डारी का साहित्यिक परिचय-मन्नू भण्डारी का साहित्यिक सफर १९५० के दशक से प्रारंभ होता है, जब उन्होंने 'हंस' पत्रिका में कहानियाँ लिखना शुरू कीं। नई कहानी आंदोलन के केंद्र में रहते हुए उन्होंने यथार्थवाद को अपनाया, जो मध्यम वर्गीय नारी के जीवन को केंद्र में रखता है। उनका पहला उपन्यास 'एक बैलगाड़ी की सैर' (१९६१) ग्रामीण नारी की सादगी को दर्शाता है, लेकिन बाद की रचनाएँ शहरीकरण और आधुनिकता के प्रभाव को उजागर करती हैं। 'आपका बंटी' उनके सबसे चर्चित उपन्यासों में से एक है, जो तलाकशुदा माँ की भावनात्मक संघर्ष को चित्रित करता है। इसमें नायिका मीरा अपने पुत्र बंटी को पिता के प्रभाव से बचाने की कोशिश करती है, जो नारी की मातृत्वीय चेतना को दर्शाता है। भण्डारी के साहित्य में नारी जीवन का चित्रण मनोवैज्ञानिक गहराई से युक्त है। वे नारी को निष्क्रिय पीड़ित के रूप में नहीं दिखातीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति के रूप में जो समाज को चुनौती देती है। 'महाभोज' में राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित होते हुए भी नारी की सामाजिक भूमिका प्रमुख है, जहाँ बिसेसर की पत्नी राजनीतिक साजिशों में फँसकर अपनी पहचान खो देती है। यह उपन्यास दलित विमर्श को भी छूता है, लेकिन नारी की दृष्टि से देखा जाए तो यह पुरुष-प्रधान राजनीति में स्त्री की उपेक्षा को उजागर करता है। कहानी संग्रहों में 'एक प्लेट सैलाब' और 'पैंट की आस्तीन' जैसी रचनाएँ नारी की आंतरिक घुटन को व्यक्त करती हैं।

'एक प्लेट सैलाब' में नायिका की भावनात्मक उथल-पुथल दर्शाती है कि कैसे छोटी-छोटी घटनाएँ नारी के जीवन को प्रभावित करती हैं। भण्डारी का लेखन स्त्री की शारीरिकता को भी स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करता है, जो यौन संबंधों की जटिलताओं को सामाजिक संदर्भ में रखता है। 'तीन शंकु' कहानी में विधवा नारी की कामनाओं को दबाने का दबाव दिखाया गया है, जो समाज की रूढ़ियों की आलोचना करता है।

उनका साहित्य सामाजिक मुद्दों से जुड़ा है, जैसे दहेज प्रथा, जो 'लड़की' में स्पष्ट है। यहाँ नायिका दहेज के कारण विवाह की जंजीरों में बंधी रहती है, लेकिन अपनी चेतना से मुक्ति की तलाश करती है। भण्डारी की शैली सरल लेकिन प्रभावशाली है, जो संवादों के माध्यम से नारी की आंतरिक दुनिया को उकेरती है। हिंदी साहित्य में वे स्त्री लेखन की परंपरा को मजबूत करती हैं, जहाँ कृष्णा सोबती की भंगिमा और उषा प्रियंवदा की संवेदनशीलता के साथ उनका यथार्थवाद विशिष्ट है। कुल मिलाकर, भण्डारी का साहित्य नारी जीवन को बहुआयामी रूप देता है, जो संघर्ष से सशक्तिकरण तक की यात्रा दर्शाता है।

नारी जीवन के चित्रण के प्रमुख रूप-मन्नू भण्डारी के साहित्य में नारी जीवन के चित्रण के प्रमुख रूप पारिवारिक, प्रेम-यौन, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर विभाजित हैं। सबसे पहले, पारिवारिक विघटन एक केंद्रीय थीम है। संयुक्त परिवार के विघटन को 'एखाने आकाश नाई' में दर्शाया गया है, जहाँ भाई-भाई के बीच आपसी संबंध टूट जाते हैं। नायिका की भूमिका परिवार की जिम्मेदारियों में सीमित हो जाती है, लेकिन वह अपनी चेतना से विद्रोह करती है। 'छत बनाने वाले' में पीढ़ीगत संघर्ष दिखाया गया है, जहाँ पुरानी पीढ़ी की प्रभुता नारी को दयनीय बनाती है। नारी परिवार में भावनात्मक केंद्र होती है, लेकिन आर्थिक निर्भरता उसे बंधक बनाती है। दूसरा, प्रेम और यौन संबंधों की जटिलताएँ। भारतीय समाज में प्रेम को सेक्स से अलग माना जाता है, लेकिन भण्डारी इन्हें जुड़ा हुआ दिखाती हैं। 'ह्त्र शंकु' (संभवतः 'तीन शंकु') में पुत्रियाँ बिना विवाह के पुरुषों के साथ रहती हैं, जो परंपराओं के विरुद्ध है। 'यही सच है' संग्रह में 'मछली सिंघाड़ा की कहानी' नारी की यौन इच्छाओं को सामाजिक अपेक्षाओं से टकराता दिखाती है। नारी पर यौन दबाव प्रमुख समस्या है, जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। 'उसकी कहानी' में बलात्कार के बाद नायिका की मनोवैज्ञानिक पुनरुत्थान स्त्री चेतना की पराकाष्ठा हैतीसरा, कामकाजी महिला की समस्याएँ। आर्थिक स्वावलंबन के बावजूद नारी पारिवारिक रूढ़ियों से मुक्त नहीं होती। 'नई नौकरी' में नौकरी ऊपरी सिफारिश से मिलती है, जो भ्रष्टाचार दर्शाती है। 'यही सच है' में बेरोजगारी नारी को जोखिम में डालती है। 'रानी माँ का चबूतरा' में पति-पत्नी के बीच द्वंद्व बढ़ता है, क्योंकि नारी की स्वतंत्रता पुरुष अहं को ठेस पहुँचाती है। भण्डारी दिखाती हैं कि नौकरी नारी को सशक्त बनाती है, लेकिन सामाजिक पूर्वाग्रह बाधा डालते हैंचौथा, विधवा जीवन की एकांतता। प्राचीन काल में विधवा को सम्मान मिलता था, लेकिन आधुनिक समाज में अनादर प्रमुख है। 'एक इंच मुस्कान' में विधवा नायिका अपनी कामनाओं को दबाकर जीती है, लेकिन आंतरिक घुटन से जूझती है। 'एखाने आकाश नाई' में विधवा माता का पालन न करने वाला पुत्र निंदनीय है। भण्डारी विधवा को पुनर्विवाह का अधिकार दिलाने की वकालत करती हैंये रूप नारी चेतना के विकास को दर्शाते हैं, जहाँ शिक्षा और जागृति मुक्ति का आधार बनती हैं।

प्रमुख रचनाओं का विश्लेषण-भण्डारी की प्रमुख रचनाओं में नारी जीवन का विश्लेषण गहनता से किया जा सकता है। सबसे पहले, 'आपका बंटी'। यह उपन्यास खंडित दाम्पत्य का यथार्थ चित्रण है। नायिका मीरा तलाक के बाद पुत्र बंटी की कस्टडी के लिए संघर्ष करती है। पिता के प्रभाव से बंटी की मानसिक समस्या नारी की मातृत्वीय पीड़ा को उजागर करती है। मीरा की चेतना आर्थिक स्वावलंबन से मजबूत होती है, लेकिन भावनात्मक द्वंद्व उसे तोड़ता है। उपन्यास दर्शाता है कि विवाह नारी के लिए व्यक्तित्व बेचना है, और तलाक मुक्ति का प्रारंभ। मीरा की डायरी के माध्यम से भण्डारी नारी की आंतरिक दुनिया को व्यक्त करती हैं, जो समाज की उदासीनता की आलोचना है।

दूसरी रचना 'महाभोज'। यह राजनीतिक व्यंग्य है, लेकिन नारी दृष्टि से देखें तो बिसेसर की पत्नी की भूमिका केंद्रीय है। वह राजनीतिक साजिशों में फँसकर अपनी पहचान खो देती है, जो पुरुष-प्रधान व्यवस्था में स्त्री की उपेक्षा दर्शाता है। उपन्यास दलित नायक दहिया के माध्यम से नारी की सामाजिक जागृति को जोड़ता है। नायिका की चेतना राजनीतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध विद्रोह है, जो नारी को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाती है।'एक इंच मुस्कान' विधवा नारी की कहानी है। नायिका सुधा विधवा होकर समाज की नजरों से जूझती है। उसकी मुस्कान एक इंच की सीमित होती है, जो आंतरिक दमन को प्रतीकित करती है। भण्डारी दिखाती हैं कि विधवा जीवन में कामनाएँ दबी रहती हैं, लेकिन सुधा की चेतना उसे स्वावलंबी बनाती है। उपन्यास सामाजिक पूर्वाग्रहों की आलोचना करता है, जहाँ विधवा पुनर्विवाह अस्वीकार्य है। कहानी 'लड़की' दहेज प्रथा पर प्रहार है। नायिका यशोदा दहेज के कारण विवाह की जंजीरों में बंधी है। पति का पुरुष -प्रधान रवैया और परिवारिक दबाव उसकी चेतना को जागृत करते हैं। यशोदा का विद्रोह स्त्री चेतना की शुरुआत है, जो आर्थिक निर्भरता से मुक्ति की मांग करता है।

'यही सच है' संग्रह बहुआयामी है। 'उसकी कहानी' में बलात्कार पीड़िता की पुनरुत्थान नारी की ताकत दर्शाता है। 'मछली सिंघाड़ा की कहानी' यौन संबंधों की स्वाभाविकता को सामाजिक अपेक्षाओं से टकराती दिखाती है। संग्रह में नारी की आर्थिक और भावनात्मक संघर्ष प्रमुख हैं। 'घुटन' नारी की आंतरिक पीड़ा का प्रतीक है। नायिका सामाजिक बंधनों से छटपटाती है, जो परंपरा-आधुनिकता के द्वंद्व को उजागर करता है। 'तीन शंकु' में विधवा की पवित्रता पर प्रश्नचिह्न लगता है। 'एक कमजोर लड़की की कहानी' में नायिका लोक लाज और परंपराओं से जूझती है। भण्डारी स्त्री को कमजोर नहीं, बल्कि मजबूत दिखाती हैं। 'एक प्लेट सैलाब' में छोटी घटनाएँ नारी के जीवन को प्रभावित करती हैं। इन रचनाओं से स्पष्ट है कि भण्डारी का साहित्य नारी जीवन को यथार्थपूर्ण बनाता है, जो संघर्ष से सशक्तिकरण तक ले जाता है।

निष्कर्ष-मन्नू भण्डारी के साहित्य में नारी जीवन का चित्रण एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जहाँ नारी केवल पीड़ित नहीं, बल्कि परिवर्तन की प्रेरक शक्ति है। उनके पात्रों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि शिक्षा और जागृति नारी को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर स्वावलंबी बनाती है, यद्यपि पारिवारिक और सामाजिक द्वंद्व बने रहते हैं। "नारी आंदोलन ने उसे मुख्यधारा में स्थान दिया, लेकिन परिवार और समाज की संरचना में गूंथी हुई नारी को पूर्ण मुक्ति अभी बाकी है।" भण्डारी का लेखन नारी को पुरुष-केंद्रित व्यवस्था से अलग कर अपनी पहचान स्थापित करने की प्रेरणा देता है, जो हिंदी साहित्य में नारीवादी विमर्श को समृद्ध करता है। उनकी रचनाएँ दहेज, बलात्कार, बेरोजगारी जैसी समस्याओं को उठाकर समाज को आईना दिखाती हैं। 'आपका बंटी' से 'महाभोज' तक नारी चेतना का विकास दिखता है, जो आधुनिक भारत की वास्तविकता है। अंततः, यह साहित्य समाज को नारी हक, स्वतंत्रता और समानता की ओर प्रेरित करता है। भण्डारी का योगदान कालजयी है, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा।

******

संदर्भ सूची-

1."भण्डारी के कथा साहित्य में नारी - विमर्श", IJESRR, V-4-4-6, https://ijesrr.org/publication/46/IJESRR%20V-4-4-6.pdf
2."मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री चेतना का विश्लेषण", IRT Shodhsagar, https://irt.shodhsagar.com/index.php/j/article/download/1115/1102/2212
3."मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ", JETIR.org, JETIR1807824, https://www.jetir.org/papers/JETIR1807824.pdf
4."मन्नू भंडारी कृत 'एक प्लेट सैलाब' कहानी संग्रह में चित्रित नारी", IJMRA.us, https://www.ijmra.us/project%20doc/2019/IJRSS_MAY2019/53-hinid%20paper-May19rss-AMIT.pdf
5."मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी", Sahityasetu, http://www.sahityasetu.co.in/issue12/niyazpathan.html
6."मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में नारी चेतना", Exotic India Art, https://www.exoticindiaart.com/book/details/mannu-bhandari-ke-upanyason-mein-nari-chetna-hbm761/
7."मन्नू भंडारी की कहानियों में स्वावलंबी स्त्री", IJAER.org, https://ijaer.org/admin/uploads/paper/file1/plHKX%2819319%29RMQcBQ6E4OY2L48w==1.pdf
8."Mannu Bhandari turned the eye inwards...", Indian Express, https://indianexpress.com/article/opinion/editorials/mannu-bhandari-hindi-literature-progressive-woman-writers-7626374/
9."A Critique of Mannu Bhandari's Mahabhoj...", University of Sydney, https://openjournals.library.sydney.edu.au/LA/article/view/17069/14650
10."मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री चेतना का अध्ययन", IJESRR, https://ijesrr.org/publication/72/1.%20ijesrr%20dec%202020.pdf